Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

महाकवि सूरदास का सौन्दर्य-बोध

Dr. Upasana Jindal*

P.hD (Hindi), M.Phil. (Hindi), M.A. (Hindi), B.Ed.

सार – ***सौन्दर्य सृष्टि का मूल तत्त्व है। सृष्टि के बाहर और भीतर सौन्दर्य ही आनंद का सर्वातिशायी महाभाव है। वस्तुतः यह सम्पूर्ण विश्व उस विराट चेतना की सौन्दर्यमयी अभिव्यक्ति है। बहती हुई नदियों खिले हुए पुष्पों लहराते हुए वनों हिलोरे लेता सागर बर्फ से ढकी ऊँची-ऊँची पहाड़ की चोटियाँ तारिकाओं से आच्छादित आकाश-ये सभी सौन्दर्य की विराट चेतना को उजागर करते हैं। सृष्टि की मूल चेतना आनन्द है और आनंद की प्राप्ति में सौन्दर्य-तत्त्व सहायक सिद्ध होता है। संसार की लगभग सभी वस्तुएँ सौन्दर्यमूलक हैं। मानव की चेतना का विकास वस्तुतः सौन्दर्य चेतना का ही विकास है। महाकवि प्रसाद ने सौन्दर्य को 'चेतना का उज्ज्वल वरदान कहा है।***

----------X----------

'सौन्दर्य शब्द का उल्लेख ऋग्वेद में अनेक स्थलों पर 'सूनरी 'सूनरि 'सूनरो इत्यादि के रूप में हुआ है। 'अलंकारशास्त्र और 'संस्कृत काव्य ग्रंथों में सौन्दर्य शब्द के लिए अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग हुआ है। आचार्य रूद्रट ने सौन्दर्य के लिए 'रमणीय' शब्द का प्रयोग किया है। कालिदास के 'अभिज्ञानशाकुन्तलम में सौन्दर्य के लिए 'लावण्य शब्द का प्रयोग किया है। 'अमरकोश' में 'सौन्दर्य शब्द के अनेक पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग मिलता है-

सुदरं रुचिरं चारु सुषमं साधु शोचनम्।

कान्तं मनोरमं रुच्यं मनोज्ञं पंनु मंजुलम्।।

अभीष्टेऽभप्सितं हृदयदधितं वल्लभंप्रियम्।1

उपर्युक्त पंक्तियों में सौन्दर्य के लिए सुंदर रुचिर चारु सुषमा साधु शोभन कांत मनोरम रुच्य मनोज्ञ यंजु मंजुल आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है।

'सौन्दर्य के पारखी महाकवि सूरदास ने 'सूरसागर के अनेक पदों में सौन्दर्य के लिए अनेक शब्दों का प्रयोग किया है यथा- 'सुंदर 'रूप 'छवि 'सोभा 'सुन्दरताई 'चारु 'छबीली 'सोभाराशि 'रूपसरोवर 'सुंदरता की रास 'सुंदरता कौर सागर 'सलोने 'मनोहर 'छविगुनरूपविधान 'ललित आदि।

'वाचस्पत्यम् कोश के अनुसा 'सुंदर शब्द की व्युत्पत्ति 'सु उपसर्गपूर्वक 'उन्द धातु से 'अरन् प्रत्यय जोड़कर मानी है। इस प्रकार धारणर्थ के अनुसार 'सुंदर शब्द का अर्थ हुआ- 'सु अर्थात् सुष्ठु या भली प्रकार 'उन्द अर्थात् आर्द्र करना और 'अरन कत्र्तृवाचक प्रत्यय इस प्रकार सौन्दर्य शब्द का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ हुआ- अच्छी प्रकार से आर्द्र (गीला) या सरस करने वाला। 'सौन्दर्य शब्द का निर्वचन इस प्रकार भी हो सकता है- 'सुन्द राति इति सुंदरम् तस्य भावः सौन्दर्यम्। सुन्द को जो लाता हो वह सुंदर है। सौन्दर्यशास्त्र के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. फतहसिंह लिखते हैं कि वेद में सौन्दर्यतत्त्व को स्वस्ति की संज्ञा दी गई है। 'स्वस्ति शब्द 'स्व और 'अस्ति के संयोग से बना हे। 'सु का अर्थ है- सुन्दर और 'अस्ति सत्ता का द्योतक है। डॉ. नगेन्द्र ने 'भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका में सौंदर्य के अनेक पर्यायों की सूची प्रस्तुत की है। यथा- 'रुचिर 'चारु 'सुषम 'शोभन 'कांत 'मनोरम 'रुच्य 'मनोज्ञ 'मंजु 'मंजुल 'ललित 'सुष्ठु 'काम्य 'कमनीय 'रमणीय आदि।

भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने सौन्दर्य की अपने-अपने ढंग से व्याख्या की है- महाकवि माध के अनुसार - 'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदैव रूपं रमणीयतायाः अर्थात् सौन्दर्य क्षण-क्षण नव्यता को प्राप्त होता रहता है। वह कभी पुरातन नहीं होता अर्थात् सुंदर वस्तु प्रत्येक अवस्था में सुंदर लगती है।

कविवर बिहारी के अनुसार

समै समै सुन्दर सबै रूप कुरूप न कोय।

मन की रुचि जेती तितै तित तेती रुचि होय।।6

महाकवि जयशंकर 'प्रसाद के अनुसार-

www.ignited.in

उज्ज्वल वरदान चेतना का सौन्दर्य जिसे सब कहते हैं।

जिसमें अनन्त अभिलाषाओं के सपने जगते रहते हैं।7

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार 'सौंदर्य बाहर की कोई वस्तु नहीं है मन के भीतर की वस्तु हे। डॉ. हरिद्वारी लाल शर्मा के अनुसार 'अपनी प्रत्यक्ष अनुभूति स्मृति कल्पना आदि द्वारा आनंद को उत्पन्न करने वाले वस्तु के गुण को सौन्दर्य कहते हैं।9 डॉ. रमेश कुंतल मेघ के अनुसार 'सौन्दर्य एक धारणा है। एक विचार अथवा वस्तु का गुण इसलिए वस्तुनिष्ठ है।' कीट्स के अनुसार 'ठमंनजल पे जतनजीए ज्तनजी पे इमंनतजल '11

सूर-काव्य की अध्येता डॉ. मीरा श्रीवास्तव ने सौंदर्य की अनेक विशेषताओं की ओर संकेत किया है। यथा- ऐक्य समानुपात संतुलन नित्य नव्यता सुरुचिपूर्णता आकर्षणमयता अतृप्तता आह्लादकारिता सम्पूर्णता आसक्ति मूलकता संस्कारमयता आदि। वस्तुतः साहित्य और सौन्दर्य का घनिष्ठ सम्बन्ध है। साहित्य 'सत्यम् शिवम्-सुन्दर के अन्वेषण के लिए सदैव प्रयत्नशील रहा है। साहित्य का सम्बन्ध अनुभूति से है और सौन्दर्य भी अनुभूतिगम्य है। साहित्य का उद्देश्य मानव-मन में छिपी सौंदर्यवृत्ति को उजागर करना है जो उसके मन-मानस में सोई रहती है। साहित्य में सौन्दर्य को विविध रूपों में प्रस्तुत किया जाता है जैसे-दिव्य-सौंदर्य मानवीय सौंदर्य प्रकृति सौंदर्य शिल्प-सौंदर्य आदि। हिन्दी जगत् में विद्यापति ने सौंदर्य को अतृप्त भावना माना है तो तुलसीदास ने सौंदर्य को भावमूलक वस्तु माना है। सूरदास ने सौन्दर्य के लिए दर्जनों शब्दों को प्रयोग किया है तो बिहारी ने सौंदर्य को 'मन की रुचि का विषय बताता है। मतिराम ने सौंदर्य को 'नित्य नवीन कहा है। साहित्य और सौंदर्य का अत्यंत समीपी सम्बन्ध है। सौंदर्य आधार है और साहित्य आधेय है। जिस प्रकार आधार के बिना आधेय की कल्पना नहीं की जा सकती उसी प्रकार सौन्दर्य के बिना साहित्य की कल्पना संभव नहीं है। साहित्य का मुख्य उद्देश्य सौंदर्य की प्रस्तुति है।

महाकवि सूरदास के सौंदर्य बोध के विविध आयाम:

सौंदर्य चेतना के विविध आयाम हैं। यह संसार आकर्षक रंग स्थली है। सौंदर्य-बोध अत्यंत व्यापक शब्द है। यह सम्पूर्ण विश्व अनंत सौन्दर्य से भरा हुआ है। कहीं ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं तो कहीं कल-कल निनाद करती हुई नदियाँ हैं तो कहीं लहराता हुआ विशाल समुद्र है तो कहीं विस्तृत रेगिस्तान है। कहीं लहराते खेत हैं तो कहीं बीहड़ जंगल है कहीं नर-नारी का सौन्दर्य मन को अभिभूत करता है तो कहीं बालकों का भोलापन मन को मुग्ध करता है। कहीं पर कलाओं की कलात्मकता मन को आकृष्ट करती हैं तो कहीं साहित्यिक सौंदर्य मन में नये भाव एवं नये विचार उत्पन्न करता है। इस प्रकार सोन्दर्य बोध का फलक अत्यंत व्यापक और विस्तृत है। महाकवि सूरदास के सौन्दर्य बोध के विविध आयामों को निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है-

दिव्य सौंदर्य:

दिव्य सौंदर्य से तात्पर्य है- उदात्त और अलौकिक सौन्दर्य। दिव्य सौंदर्य मानवीय सौंदर्य से ऊपर की वस्तु होता है। दिव्य सौन्दर्य में उदात्तता का भाव प्रमुख होता है। पाश्चात्य विद्वान् ब्रेडले ने सौन्दर्य के पाँच भेद किये हैं- उदात्त भव्य सुंदर मनोरम और ललित।12 ब्रेडले ने सौंदर्य तत्त्व के अन्तर्गत उदात्तता को विशेष महत्त्व दिया है। उदात्त तत्त्व से दिव्य सौंदर्य की अभिव्यक्ति होती है।

सूर काव्य में श्रीकृष्ण और राधा दिव्य सौंदर्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। कृष्ण-अवतार की कथा के माध्यम से कृष्ण के दिव्य सौंदय का वर्णन किया गया है। वे सौंदर्य की दिव्य राशि हैं। श्री कृष्ण परम सौंदर्य की मूर्ति हैं जिसके सम्मुख अप्सराओं गंधर्वों का सौंदर्य भी विरूप हो जाता है। सूर कृत कृष्णकथा में कृष्ण और राधा का दिव्य रूप में वर्णन किया है। श्रीकृष्ण सुख के धाम तथा पूर्ण काम हैं। वे सुख रस रूप गुण यौवन शक्ति यश आनंद दया विद्या बल चतुरता और कला की राशि हैं-

श्याम सुख-राशि रस-रासि भारी।

रूप की रासि गुन रासि जीवन-रासि

थकिते भई निरखि नव तरुन-नारी।

सील की रासि जस रासि आनंद रासि

नील नव जलद-छवि बरन कारी।13

सूरदास ने राधा के आलौकिक सौंदर्य का वर्णन भी किया है। यथा-

नीलांबर पहिरे तनु यामिनी जनु घन दमकति दामिनी।

ससि मुख तिलकदिये मृगमद कौ खुभी जराइ जरी है।

नासा तिल-प्रसून बेसरि छवि मोतिन माँग भरी है।।14

www.ignited.in

मानवीय सौंदर्य:

मानव विधाता की सर्वश्रेष्ठ रचना है। चैरासी लाख योनियों में भ्रमण करते हुए जीव को पुण्यों के फलस्वरूप मानव-योनि प्राप्त होती है। सूरदास ने अपने काव्य में कृष्ण को एक शृंगारी पुरुष के रूप में प्रस्तुत किया है। सूरदास ने कृष्ण के बाल और किशोर रूप का वर्णन किया है। उन्होंने कृष्ण के बाह्य रूप का सहज स्वभाव वेशभूषा बालसुलभ चेष्टाओं का स्वाभाविक चित्रण किया है। कृष्ण बड़े हुए घुटनों के बल चलने लगे। साधारण बालकों के समान उनका धूल-घुसरित होना कितना मनमोहक है-

सोभिम कर नवनीत लिए।

घुटरनि चलत रेणु तन मंडित मुख दधि लेप किए।

चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन-तिलक दिए।।15

राधा नित्य नवीना है। समस्त सौंदर्य-उपादानों को एकत्र कर विधाता ने स्वयं इस मदनमयी मूर्ति को रचा है-

आज सखी इक बाम नई सी।

ठाढ़ी हुति अंगना द्वारे विधि विरचि किंधों मदन मई सी।16

कहा जाता है कि यौवन का पूर्ण उन्मेष किशोर अवस्था में ही होता है। सूरदास ने कृष्ण के साथ-साथ राधिका की किशोरावस्था का भी वर्णन किया है-

नवल किशोर नवल नागरिया।

आज वन राजत जुगल किशोर।।

श्रीकृष्ण की लीला का वर्णन करते हुए सूर ने कृष्ण की त्रिभंगी मुद्रा मुरली वादन अलंकृत शोभा लीला चातुर्य आदि का विस्तार से वर्णन किया है।

नारी-सौंदर्य:

नारी सौन्दर्य की प्रतिमा होती है। संसार का समस्त सौन्दर्य नारी सौंदर्य में समाया हुआ है। नारी बाहर और भीतर-दोनों दृष्टियों से अपूर्व है। वह बाहर से जितनी आकर्षक है भीतर उतनी ही भावमयी और आनंदमयी है। सूरदास ने नारी के दो रूपों मा वर्णन किया है- बाह्य सौंदर्य व आंतरिक सौंदर्य। सूर ने नारी के बाह्य सौंदर्य के निरुपण के अंतर्गत अंग-प्रत्यंग वेशभूषा आभूषण अनुलेपन आदि का वर्णन किया है। अंग वर्णन में नारी की स्निग्धता गठन सुडौलता मृदुलता सुकुमारता पुष्टता तथा आयु वर्ग कद स्वास्थ्य आदि का वर्णन किया गया है।17

प्रकृति सौंदर्य:

मानव और प्रकृति का चिर सम्बन्ध है। प्रकृति ने मानव को अपने सौन्दर्य से आकृष्ट किया है। वस्तुतः मानव ने प्रकृति की गोद में खेलते हुए सौंदर्य का अहसास किया है। प्रकृति सौंदर्य की अधिष्ठात्री है। सुरेन्द्र वारलिंगे के अनुसार- 'प्रकृति सौंदर्य की सर्जना का मूल स्त्रोत है।18 सूरदास के काव्य में प्रकृति के अनेक उपादानों का प्रयोग किया है। यथा- घन विद्युत दादुर बक मयूर चातक पिक द्रुम-बेली पछी तृन चन्द्र कुमुदिनी रवि आदि। सूरदास ने अपनी रचनाओं में प्रकृति का विस्तृत वर्णन किया हे। कतिपय बिंदु द्रष्टव्य हैं-

(1) बिन गोपाल बैरिन भईं कुंजै।

(2) देखियत कालिंदी अति कारी।

(3) किंधो घन गरजत नहिं उन देसनि।

(4) बरु ए बदरौ बरषन आए।

(5) कोउ माई! बरजै या चंदहि।।

कविवर सूरदास ने प्रकृति का उद्दीपन रूप में भी वर्णन किया है। यथा-

बिनु गुपाल बैरनि भई कुंजै।

तब ये लता लगतिं तन सीतल अब भई विषम ज्वाल की पुंजै।

वृथा बहति जुमना खग बोलत वृथा कमल-फूलनि अली गुंजै।

पवन पान घनसार सजीवन दधि-सुत किरन भानु भई भुंजै।19

कलागत सौन्दर्य:

कला को मानव-संस्कृति की उपज माना जाता है। मानव ने अपने श्रेष्ठ संस्कारों के रूप में जो कुछ सौन्दर्य-बोध प्राप्त किया है उसे 'कला कहा जाता है। कला मानव की उध्वमुखी चेतना का परिणाम है। कला को दो भागों में बांटा गया है- उपयोगी कला और ललित कला। कलागत सौन्दर्य को कवियों ने वास्तुकला चित्रकला संगीत कला और वस्त्राभूषण कला

आदि के माध्यम से प्रस्तुत किया है। वस्तु कला के अन्तर्गत महल भवन आदि के कलात्मक वैभव को प्रस्तुत करके कविगण सौन्दर्य की अभिव्यंजना करते हैं। चित्रकला को रंग-रेखाओं और शब्द चित्रों के माध्यम से से व्यक्त किया जाता है। महाकवि सूरदास ने शब्दों के माध्यम से अनेक सौंदर्यमय चित्रों की सृष्टि की है। सूरदास ने राग-रागिनी वाद्य यंत्रों नृत्यकला आदि का विस्तृत विवेचन किया है। कवि ने समाज में प्रयुक्त होने वाले वस्त्राभूषणों के सौन्दर्य का भी वर्णन किया है।

भाव-सौंदर्य:

सुंदर-असुंदर के प्रश्न के साथ भाव-सौन्दर्य का प्रसंग भी जुड़ा है। रूप-कुरूप सत्य-असत्य अच्छा-बुरा आदि परिस्थितियों का निरूपण भाव के आधार पर ही होता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने काव्य में भावों की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए कहा है- 'कविता केवल वस्तुओं के ही रूप-रंग के सौन्दर्य की छटा ही नहीं दिखाती प्रत्युत् कर्म और मनोवृत्ति के सौन्दर्य के भी अत्यंत मार्मिक दृश्य सामने रखती है। वह जिस प्रकार विकसित कमल रमणी के मुख-मंडल आदि का सौन्दर्य मन में लाती है उसी प्रकार उदारता वीरता त्याग दया पे्रमोत्कर्ष इत्यादि कर्मों तथा मनोवृत्तियों का सौन्दर्य भी मन में जगाती है।20

महाकवि सूर ने अपने काव्य में प्रेम-साधना को ही एकमात्र लक्ष्य माना है। उनकी प्रेम साधना का आधार सौन्दर्य है और सिद्धि आनंद है। 'भ्रमरगीत प्रसंग में गोपियों के प्रेम द्वारा सूर ने प्रेम-साधना के स्वरूप को स्पष्ट किया है। यथा-

प्रेम प्रेम ते होइ प्रेम तें पारहि जाइयै।

प्रेम बंध्यों संसारप्रेमपरमारथ लहियै।

साँचों निहचै प्रेम को जीवन्मुक्ति रसाल।

एक निहचै प्रेम को जनै मिलै गोपाल।।

वस्तुतः प्रेम का आधार सौंदर्य है जो सभी को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। वस्तुतः कल्पना भावना और आनंद में सौन्दर्य चेतना प्रस्फुटित होती है। पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार भाव का सौन्दर्य उसके रूप संमूर्तन में है। विद्वानों ने भावों की तीन कोटियों में विभाजित किया है- कोमल वेदनामय और उग्र। कोमल भाव सुखात्मक होते हैं वेदनामय भाव दुःखात्मक होते हैं। उग्र भाव मन में तीव्र कंपन उत्पन्न करते हैं। कोमल भावनाएँ अपनी कृति के कारण सौंदर्यमूलक हैं। वेदना और उग्र भावनाओं में सौंदर्य की अनुभूति कवि की दृष्टि और भावगत मूल व्यवस्था पर निर्भर करती है।

विद्वानों ने रूप भाव और चेष्टा व्यापार को सौंदर्य का प्राथमिक धर्म माना है। वास्तव में ये मनोभाव मानवीय और नैसर्गिक होते हैं। बाल्यावस्था के भावों में सहजता और सरलता होती है। किशोर अवस्था के भावों में छेड़छाड़ हास-परिहास व्यंग्य-विनोद आदि की प्रधानता होती है। ये सभी सुखात्मक भाव कहलाते हैं।

शृंगार के दो पक्ष होते हैं- संयोग और वियोग। संयोग सम्बन्धी भाव सुखात्मक भाव होते हैं- जबकि वियोगावस्था के भाव दुःखात्मक होते हैं। 'सूरसागर में संयोग की स्थिति में प्रेम और सौन्दर्य का सागर उमड़ता है तो वियोग की स्थिति में वेदना की पराकाष्ठा देखी जा सकती है। सूरदास ने अपने भ्रमरगीत में गोपियों की विरह-दशा का वर्णन निम्न पंक्तियों में किया है-

निसिदिन बरसत नैन हमारे।

सदा रहत पावस रितु हमपै जबतें स्याम सिधारे।।21

गोपियों की विरह दशा में एकनिष्ठता अनन्यता तीव्रता गंभीरता आदि भावों की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है। सौंदर्य का क्षेत्र भावों की क्रीड़ाभूमि है। भावों की व्यंजना ध्वनन व अभिव्यक्ति ही कविता और कला का व्यक्तित्व है। कविता और कला दोनों ही सौन्दर्य की प्रस्तोता होती हैं। वैसे भावों की कोई सीमा नहीं। देशकाल की अभिरुचि के अनुसार सौंदर्य के मानदंडों में ईषत् परिवर्तन होता रहता है। यों तो भावों का संसार अद्भत और अनोखा है लेकिन सौन्दर्य के संदर्भ में श्रंगार प्रेम भक्ति भाव और वात्सल्य भाव का विशेष महत्त्व है। सूरदास ने उक्त भावों की प्रस्तुति अपने काव्य में की है।

भावों के अन्तर्गत प्रेम तत्व का विशेष महत्त्व है। डॉ. नगेन्द्र ने इसी राग तत्त्व बताते हुए कहा है कि रागतत्व सौंदर्य चेतना का योजक तत्त्व है।22 प्रेम का मूलाधार लौकिक प्रेम ही है। लौकिक प्रेम वासना नहीं है बल्कि हृदय की एक महान् ललक है। निश्च्छलता नैसर्गिकता कष्ट सहिष्णुता सौंदर्यप्रियता हर्ष-उल्लासमयता बिरहाकुलता परानुरक्ति वात्सल्य भाव आदि प्रेम और सौंदर्य के विशिष्ट तत्त्व है। प्रेम के संदर्भ में सौंदर्यप्रियता का विशेष महत्त्व है क्योंकि पे्रमी-प्रेमिका सच्चे प्रेम की डोर में बंधे हुए होते हैं।

शिल्प सौन्दर्य:

सौंदर्य एवं शिल्प का नितांत अनिवार्य सम्बन्ध है। इन दोनों के बिना काव्य की कल्पना नहीं की जा सकती। यदि सौंदर्य

काव्य की आभ्यांतरिक चेतना है तो शिल्प उस चेतना को चित्रित करने वाला बाह्य उपादान है। यदि सौन्दर्य आत्मा है तो शिल्प शरीर है। शिल्प वस्तुतः सौन्दर्य का प्रस्तोता एवं उसको विशेष गरिमा प्रदान करने वाला तत्त्व है। 'शिल्प शब्द 'शील धातु में 'प प्रत्यय जोड़ने से बना है। 'शील का अर्थ है- ध्यान करना या अभ्यास करना। 'प प्रत्यय का अर्थ है पीने वाला। अतः शिल्प का अर्थ हुआ-ध्यान या अभ्यास को पीने वाला अर्थात् ध्यान या अभ्यास को संपन्न करने वाला। 'वृहत् हिन्दी कोश के अनुसार 'शिल्प का अर्थ है वस्तु को रचने का ढंग या तरीका कारीगरी हस्तकर्म रूप।''23 डॉ. कैलाश वाजपेयी के अनुसार 'काव्य कृति के निर्माण में जिन उपादानों द्वारा काव्य का ढांचा तैयार किया जाता है। वे सब काव्य-शिल्प कहलाते हैं।''24 वस्तुतः कविता को मूत्त रूप प्रदान करके उसे आकर्षक एवं सुंदर बनाने वाले सहयोगी तत्त्वों को समग्र रूप को काव्य शिल्प कहते हैं। भाषा अलंकार शब्द शक्ति काव्य गुण बिम्ब प्रतीक छंद आदि काव्यशिल्प के उपदान कहलाते हैं।

भाषा:

भाषा की व्युत्पत्ति 'भाष् धातु से हुई है जिसका अर्थ है-व्यक्त वाणी। सुमित्रानंदन पंत ने भाषा को 'नादमय चित्र कहा है जो पाश्चात्य विचारक डॉ. जॉनसन ने भाषा को 'विचारों का परिधान कहा है। भावानुकूलता चित्रमयता प्रतीकात्मकता सूक्तिमयता आदि भाषा की विशेषताएँ हैं। वस्तुतः भाषा काव्य का शरीर है जिसके अभाव में काव्य की कल्पना नहीं की जा सकती। महाकवि सूरदास ने ब्रजभाषा को अपनाकर जनमानस को रससिक्त किया है। उन्होंने अपनी प्रतिमा एवं कला के द्वारा उसे सरस संगीतमय सुमधुर और संपन्न बनाने का सार्थक प्रयास किया है। सूरदास की भाषा में पालि अपभ्रंश के अतिरिक्त गुजराती राजस्थानीपंजाबी खड़ी बोली हरियाणवी अवधी कन्नोजी बुंदेलखंडी अरबी-फारसी शब्दों का सुंदर प्रयोग हुआ है। वस्तुतः सूरदास का शब्द भंडार बहुत व्यापक है जिसके माध्यम से कवि ने काव्य-लालित्य को उजागर करने का महत्त्वपूर्ण प्रयास किया है। उन्होंने अपनी भाषा में तत्सम तद्भव देशज अरबी-फारसी शब्दों का सुष्ठु प्रयोग किया है। कवि ने अनेक पदों में ध्वन्यात्मक शब्दों का प्रयोग किया है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

गहरात झहरात दावानल आयौ

झपटि झपटति लपट फूल-फल चट-चटकि

फाटत लटलटकि दुरम दुरमनायौ।

अति अगिन-झार मंझार घुंघारि करि

उचटि अंगार झंझार छायौ।

बरत बन पात महरात झहरात अररात तरु महा धरनी गिराओ।25

मुहावरे-लोकोक्ति सौष्ठव:

सूरदास ने भाषा को सशक्त प्रभावोत्पादक एवं प्रौढ़ बनाने के लिए मुहावरे एवं लोकोक्तियों का सुष्ठु प्रयोग किया है। 'चाम के दाम चलावै'सहद लाइ कै चाटों'लीक खींचकर कह्यो आदि मुहावरों केा प्रयोग से काव्य-लालित्य में श्रीवृद्धि हुई है। 'अपने स्वारथ के सब कोऊ'काकी भूख गई मन लाडू'मूरी के पातन के बदलै को मुक्ताहल दैहे आदि लोकोक्तियों का सटीक प्रयोग हुआ है।

शब्द शक्ति सौष्ठव- शब्द की बोधक शक्ति को शब्द-शक्ति कहा गया है। भारतीय काव्यशास्त्र में शब्द शक्ति के तीन भेद किये गए हैं- अभिधा लक्षणा और व्यंजना। जब काव्य में मुख्यार्थ के बाधिक होने पर रूढ़ि या प्रयोजन से अन्य अर्थ का बोध होता है उसे लक्षणा शब्दशक्ति कहते हैं। कवि ने लक्षणा शब्दशक्ति का प्रयोग क्रियापद विशेषण और क्रिया विशेषण के रूप में किया है। यथा-

'सुत मुख देखि जसोदा फूली 'पिय बिनु नागनि कारी रात।'

अलंकार सौष्ठव:

'अलंकार शब्द 'अलम् और 'कार दो शब्दों के मेल से बना है। 'अलम् का अर्थ है-भूषण और 'कार का अर्थ है-कत्ता अर्थात् भूषणकत्ता अर्थात् किसी वस्तु को भूषित करने वाले तत्त्व को अलंकार कहते हैं। आचार्य दंडी ने काव्य के शोभा विधायक धर्म को अलंकार कहा है- 'काव्यशोभा करान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते।'26

कविवर सूरदास ने अनुप्रास यमक श्लेष वक्रोक्ति उपमा रूपकउत्प्रेक्षा प्रतीप व्यतिरेक विभावना संदेह अपह्नुति विरोधाभास उल्लेख स्वभावोक्ति अतिशयोक्ति अर्थान्तरन्यास आदि अलंकारों का सुष्ठु प्रयोग किया है। उपमा का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

हरि-दरसन की साध मुई।

उड़ियै उड़ी फिरति नैनन संग पर फूटै ज्यौ आक-रुई।27

उक्त पंक्तियों में 'हरि दरसन की साध उपमेय है। 'आक-रुईउपमान है 'उड़ि फिरति साधारण धर्म है। 'ज्यौं वाचक शबद है। 'हमारे हरि हारिल की लकरी आदि पंक्तियाँ उपमामूलक हैं।

बिम्ब-सौष्ठव

'बिम्ब को काव्यशास्त्रियों ने 'मानसचित्र कहा है। डॉ. नगेन्द्र के मतानुसार'कल्पना की सहायता से शब्दार्थ द्वारा निर्मित ऐसे 'मानसचित्र को बिम्ब कहते हैं- जिसमें भाव तत्त्व का सम्मिश्रण हो।'28 महाकवि सूरदास ने चाक्षुष नाद स्पृश्य गंध रस्य गत्यात्मक मिथकीय भाव आदि बिम्बों का सटीक प्रयोग किया है। चाक्षुष बिम्ब का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

सोभित कर नवनीत लिए।

घुटुरुनि चलत रेनु-तन-मंडित मुख दधि लेप किए।29

प्रतीक सौष्ठव:

'प्रतीक शब्द अंग्रेजी के 'Symbol' का पर्याय है जिसका अर्थ है-किसी अमूर्त और अगोचर वस्तु की तुलना किसी अन्य मूर्त या अगोचर वस्तु से की जाए। जैसे कबीर ने 'मन को 'सिंह जीवात्मा को 'हंस माया को 'ठगिनी आदि प्रतीकों का प्रयोग किया है।

डॉ. वी. लक्ष्मय्या शेट्टी ने सूरदास द्वारा प्रतीकों को छः वर्गों में विभक्त किया है- अवतार प्रतीक लीला प्रतीक लीला परिकर प्रतीक सांस्कृतिक प्रतीक दार्शनिक प्रतीक काव्य-प्रतीक। सूरदास ने 'जीवको 'मृग' बैल 'चकई' मृगी' सुआ आदि कहा है। उन्होंने माया को 'नारी'मोहिनी'कामिनी'साँपनीआदि कहा है।

काव्य-गुण सौष्ठव:

आचार्य वामन के अनुसार'काव्य शोभायाकर्त्तारो धर्मा गुणाःअर्थात् काव्य की शोभा करने वाले धर्म को गुण कहा है। भारतीय काव्यशास्त्र में तीन गुणों की अधिक चर्चा हुई है- प्रसाद ओज और माधुर्य। ओज गुण का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

झपटि झपटत लपटफूल-फल चट-चटिक।

फटत लटलटकि दुरम दुरम नवायौ।

अति अगिनि-झार भंमार धुंघार करि।

उघरि अंगार झंझार धायो।30

छंद सौष्ठव:

'छंद शब्द 'छद् धातु में 'असन्प्रत्यय लगने से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है- बँधना। छंद की परिभाषा देते हुए डॉ. ओमप्रकाश शास्त्री कहते हैं- 'किसी रचना के पद में मात्राओं तथा वर्णों की नियत संख्या क्रम संख्या एवं यति के विशेष विधान पर आधारित नियमों को छंद कहते हैं। सूरदास ने मुख्य रूप से मात्रिक और वार्णिक छंदों का प्रयोग किया है। सूरदास ने शशिवदना माली प्रणयछंद रजनीमधुरजनी जल तरंग वदन सवैया प्रतिफल सूरघनाक्षरीअखंड आदि छंदों का सुष्ठु प्रयोग किया है। 'शशिवंदना छंद का प्रयोग द्रष्टव्य है। इसके प्रत्येक चरण में 10 मात्राएँ होती हैं। यथा-

जल थल पवन थक्यौ खग मृग तरु बिथक्यौ।

देखत मदन जक्यौ चरननि सरन तक्यौ।31

शैली सौष्ठव: शैली का शाब्दिक अर्थ है- काव्य-प्रस्तुति की रीति या ढंग। आचार्य वामन रीति को विशिष्ट पद रचना कहा है। सूरदास ने अपने काव्य की प्रस्तुति में अनेक शैलियों का प्रयोग किया है जिनमें प्रमुख हैं- दृष्टिकूट पद शैलीवर्णनात्मक शैली गेयपद शैली।

वस्तुतः महाकवि सूरदास हिंदी जगत के सूर्य हैं। वे वल्लभ सम्प्रदाय के प्रतिभावान कवि हैं। 'सूरसागर उनकी प्रतिभा का विकसित पुष्प है जिसमें बारह स्कंद हैं। सूरदास भक्त होने के साथ सौन्दर्य-बोध के प्रस्तोता भी हैं। उन्होंने सौन्दर्य के अनेक आयाम प्रस्तुत किये हैंजिनमें प्रमुख हैं- दिव्य सौन्दर्य मानवीय सौन्दर्यप्रकृति सौन्दर्य कलागत सौंदर्य भाव सौंदर्य शिल्प सोंदर्य आदि। वस्तुतः सूरदास का 'सूरसागरबल चेष्टाओं और बाल क्रीड़ाओं का एक वृहत् कोश है। वे बाल मनोविज्ञान के कुशल पारखी हैं। इस दृष्टि से वे 'विश्वकवि हैं। कवि ने वात्सल्य शृंगार और कृष्ण की विविध लीलाओं के माध्यम से सौन्दर्य का विविधमुखी रूपायन किया है।

संदर्भ

1. अमर कोश तृतीय कारिका
2. तारानाथ वाचस्पति वाचस्पत्यम् पृ. 3314
3. फतहसिंह भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका (पूर्व पीठिका)
4. नगेन्द्र भारतीय सौंदर्यशास्त्र की भूमिका पृ. 32

www.ignited.in

5. माघ 'शिशुपालवधाम 4/27

6. बिहारी बिहारी रत्नाकर दोहा-432

7. जयशंकर 'प्रसाद कामायनी (लज्जा सर्ग)

8. रामचन्द्र शुक्ल चिंतामणि (भाग-1 पृ. 224

9. हरद्वारी लाल शर्मा सौन्दर्यशास्त्र पृ. 10

10. रमेश कुंतल 'मेघ अथातो सौंदर्य जिज्ञासा पृ. 4-5

11. Johan Keats, The Poets Pen, ode on a Grecian U.M., P. 66

12. ए.सी. ब्रेडले ऑक्सफोर्ड लेक्चर्स ऑन पोयट्री पृ. 40

13. सूरदास सूरसागर पद 2421

14. सूरदास सूरसागर पद-1055

15. सूरदास सूरसागर पद-717

16. सूरदास सूरसागर पद- 2731

17. वात्स्यायन कामसूत्र 3/1/22

18. सुरेन्द्र वारलिंगे सौन्दर्य तत्त्व और कामसिद्धांत पृ. 32

19. सूरदास सूरसागर पद-4686

20. रामचन्द्र शुक्ल चिंतामणि (भाग-1 पृ. 166

21. सूरदास भ्रमरगीत सार

22. नगेन्द्र रससिद्धान्त पृ. 3

23. कालिका प्रसाद वृहत् हिन्दी कोश पृ. 1334

24. कैलाश वाजपेयीआधुनिक हिन्दी कविता में शिल्प पृ. 19

25. सूरदास सूरसागर पद 1471

26. दण्डी काव्यादर्श 2/1

27. सूरदास सूरसागर पद 1476

28. नगेन्द्र काव्य-बिम्ब पृ. 5

29. सूरदास सूरसागर पद 1473

30. सूरदास सूरसागर पद- 3375

31. सूरदास सूरसागपद 980

Corresponding Author

Dr. Upasana Jindal*

P.hD (Hindi), M.Phil. (Hindi), M.A. (Hindi), B.Ed.